शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत और मध्य एशिया : परस्पर संबंधों का ऐतिहासिक विवेचन

अमित कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
देव समाज कॉलेज फॉर वीमेन
फिरोजपुर , पंजाब

शोध संक्षेप

हिमालय की सनातन श्रृंखलाओं के दोनों तरफ अवस्थित भारत व मध्य एशिया परस्पर ऐतिहासिक विरासत के महत्वपूर्ण साझीदार रहे हैं।.इतिहास, संस्कृति, समाज, राजनीति, धर्म और जीवन दर्शन पर दोनों भूखंडों की परस्पर अमिट छाप आज भी सजीव हैं और सरलता से देखे जा सकते हैं.। यह कथन तनिक भी अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं है कि दोनों उपमहाद्वीपों ने परस्पर जो अमिट प्रभाव छोड़ा है। उसके अभाव में वर्तमान भारत व मध्य एशिया का स्वरूप कतिपय भिन्न होता।.भारत आज एक राष्ट्र है लेकिन मध्य एशिया लगभग एक सी विशेषताओं के साथ अनेक राष्ट्रों का समुच्चय है।.इस शोधपत्र में मैंने मध्य एशिया को एक भूखंड ही माना है क्योंकि मध्य एशियाई राष्ट्रों की उत्पत्ति 1991 के सोवियत विखंडन के परिणाम स्वरूप हुई पर उनकी मौलिक विशेषताए उन्हें आज भी एकरूपता में बांधतीं हैं।.इस शोधपत्र के माध्यम से मैं उन प्रभावों का विवेचन व विश्लेषण करूँगा जिनके आलोक में एक विशिष्ट संस्कृति व इतिहास ने आकार लिया है और जिनसे आम जनजीवन के साथ साथ दोनों उपमहाद्वीपों के इतिहास, सभ्यता, संस्कृति तथा केन्द्रीय प्रशासन गहनता से प्रभावित है और यह प्रभाव बहुआयामी व कालजयी हैं।

मुख्य शब्द - मध्य एशिया, कुषाण वंश, बौद्ध धर्म, प्रबोध चन्द्र बागची , क्षत्रप, महाक्षत्रप।

प्रस्तावना

मध्य एशिया और भारत के परस्पर ऐतिहासिक प्रभावों पर अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने गहन प्रकाश डाला है जिनमें हेरोल्ड बेली, बोन्गोर्ड लेविन, लिटविन्सकी, अर्नाल्ड टायनबी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, प्रबोध चन्द्र बागची, जेम्स टॉड, एम् एन रॉय, राजा महेंद्र प्रताप और राहुल सांकृत्यायन का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। ईरानियों के पवित्रतम ग्रन्थ *जेंदावेस्ता* में उल्लिखित है कि भारतीय, ईरानी और तूरानी एक ही देवता *त्रटोरिया* के तीन पुत्रों *तुरा, सायिरिमिया* और *आर्य* से उत्पन्न हुए।[1] सामान्य ऐतिहासिक धारणा यही है कि आर्य मध्य एशिया से ही भारत आये थे। सूफीवाद का भारत में प्रादुर्भाव मध्य एशिया से ही हुआ। मध्य एशिया के शहर बुखारा व समरकंद सूफीवाद के महान केंद्र थे। अनेक मध्य एशियाई कवियों जैसे नसीम, मसफी, महरम, मुशारिब और शौकत ने भारतीय काव्य शैली को मध्य एशिया में प्रचलित किया।[2] इतिहास में गहरी जड़ें जमाए हुए तमाम महान शासक जैसे चंगेज खान, तैमूर लंग, बाबर, हुमांयू, मुहम्मद गोरी, महमूद गजनवी, नादिर शाह मध्य एशिया से ही भारत में आये थे. 1925 ई. में। प्रबोध चन्द्र बागची ने मध्य एशिया के खानाबदोश जातियों के अध्ययन के आधार पर कुछ बहुत ही रोचक तथ्य प्रकाशित

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किये। एक अन्य विद्वान निर्मल सिन्हा ने बौद्ध धर्म को मध्य एशिया से प्रभावित सिद्ध किया, जिसके पक्ष में उन्होंने उस *सफ़ेद घोड़े* का उदाहरण प्रस्तुत किया है जो बुद्ध के जन्म की भविष्यवाणी के तौर पर उनकी माँ महामाया ने देखे थे। निर्मल सिन्हा कहते हैं कि यह *श्वेत घोडा* भारत का नहीं वरन मध्य एशिया का है क्योंकि भारत में श्वेत घोड़े नहीं होते हैं।[3]

प्रागैतिहासिक सम्बन्ध

भारत और मध्य एशिया परस्पर ऋणी हैं। दोनों ही उपमहाद्वीपों पर अनेक प्रागैतिहासिक स्थलों की उपस्थिति ने दोनों के संबंधों में नया अध्याय जोड़ा है। प्राचीनकाल के परस्पर विनिमय व आदान-प्रदान के साक्षी अनेक मध्य एशियाई स्थान हैं। किर्गिजस्तान का तकमक प्रदेश, दक्षिणी उज्बेकिस्तान की अमू दरिया घाटी, उज्बेकिस्तान में समरकंद का उत्तर-पूर्वी हिस्सा, तुर्कमेनिस्तान व कजाखिस्तान के अनेक स्थल भारत व मध्य एशिया के प्रागैतिहासिक संपर्कों के पुख्ता प्रमाण देते हैं।[4] भारत में हडप्पा संस्कृति में मध्य एशियाई तत्व प्राप्त होते हैं। सोहन संस्कृति के अनेक स्थलों का प्रसार मध्य एशिया तक था। उत्खननो से ज्ञात होता है कि ये पुरातात्विक प्रमाण पामीर के पठार से हिन्दुकुश होते हुए ओक्सास की घाटी तक विस्तृत हैं। महान मध्य एशियाई इतिहासकार रोनोव ने सोहन संस्कृति को भारत व मध्य एशिया के मध्य संपर्क का प्रथम सोपान बताया है। नव पाषाणकाल के दक्षिणी तुर्कमेनिस्तान के स्थल अनायु, अल्तिन दीप, नामाज़ा दीप सिन्धु घाटी की सभ्यता से समानता रखते हैं।[5]

महाभारत में अनेक मध्य एशियाई जातियों का उल्लेख है, जिन्हें कौरवों व पांडवों ने कुरुक्षेत्र के महान युद्ध में अपनी तरफ से शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था।[6] ऐसा ही उल्लेख रामायण में भी मिलता है। शक. पहलव (पार्थियन), कम्बोज (ताजिकिस्तान की एक जनजाति जो गाल्चा भाषा का उपयोग करती है), रिशेक (यू.ची / कुषाण), चेना, हूण और यवन[7] आदि जातियां मध्य एशिया से आविर्भूत हुई और भारत पर शासन करते हुए इन्होने भारत के इतिहास में नवीन व अनूठे अध्याय जोड़े। प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल तक परस्पर प्रभावों की एक श्रृंखला में दोनों भू खंड परस्पर अवगुंठित हैं।

भाषागत साम्य

जनसामान्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा जो संपर्कों से समृद्ध होती है। भारत और मध्य एशिया की भाषाएँ भी इसका अपवाद नहीं हैं। भारत में सामान्य भाषा के अनेक ऐसे शब्द हैं जो मध्य एशिया से आयातित हैं और यही मध्य एशिया के सम्बन्ध में भी सत्य है। प्राचीन मध्य एशिया पर ईरानी प्रभाव था और उसकी भाषा फ़ारसी से प्रभावित थी। कालांतर में वहां तुर्कों का आगमन हुआ और एक बड़े मध्य एशियाई भू-भाग को तुर्किस्तान कहां जाने लगा. भारत व मध्य एशिया दोनों की भाषाओं में उच्चारणगत समानताओं के प्रमाण मिलते हैं। *रत्न, गुरु, मणि* जैसे शब्द भारत व मंगोलिया व तिब्बत में समान प्रचलन में हैं। बुखारा , विहार शब्द से बना है. कुछ शब्द जैसे गंगा, अंग, वंग और कलिंग शब्द आर्यों के पूर्व से अस्तित्व रखते है, लिंग शब्द तिब्बती *ग्लिंग* से उद्भूत है जो आगे चल कर *गंगा* बन गया। गंगा शब्द की उत्पत्ति एक अन्य शब्द *'गंग री मो'* या *'गंग मो'* से मानी जाती है, जिसका अर्थ है *हिम की पुत्री* ।[8]

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कनिष्क प्राचीन भारत का महानतम शासक हुआ जो *यु ची* वंश का था और मध्य एशिया से आया था. इसके वंश को कुषाण वंश कहा जाता है। चौथी बौद्ध संगीति का संरक्षक कनिष्क ही था। कनिष्क का संस्कृत में अर्थ होता है 'कनिष्ठतम पुत्र'।[9]. संस्कृत शब्द *तुरुक्ष* की धातु वही है जो *तुर्क* और *शक* की है। मध्य एशिया का पुराना नाम था तुर्किस्तान। . तुर्किस्तान में *स्तान* शब्द *स्थान* का ही अपभ्रंश है।

मध्यकाल में भारत में उर्दू भाषा की उत्पत्ति भारत व मध्य एशिया के परस्पर संपर्कों के फलस्वरुप हुई। उर्दू शब्द का अर्थ होता है *तुर्की सेना का शिविर* । प्रारंभ में यह भाषा हिन्दवी या हिन्दुस्तानी के नाम से जानी जाती थी। अनेक सूफी संतों द्वारा इस भाषा ने अनेक प्रभाव ग्रहण किये और बाद में देहलवी या दखनी कहलाने लगी।[10] हिंदी भाषा में भी अनेक तुर्की शब्द समाहित हैं जैसे - *चाकू, कैंची, बीवी, बहादुर, काबू, चम्मच, तोपची, बारूद, चेचक, सराय और बावर्ची* आदि। प्रसिद्ध विद्वान सर भोलानाथ ने लगभग ऐसे 125 शब्दों की पहचान की है जो मध्य एशिया की हैं और धड़ल्ले से हिंदी के रूप में प्रयुक्त होती हैं।[11]

प्राचीन साहित्य में परस्पर प्रभावों का वर्णन

प्राचीन भारतीय साहित्य ऐसे तमाम आख्यानों से पूर्ण हैं, जिनमें दोनों उपमहाद्वीपों के परस्पर संबंधों के विस्तृत विवरण है। मार्कंडेय पुराण में मध्य एशिया के भौगोलिक विशेषताओं का विस्तृत वर्णन है। मार्कंडेय पुराण में वर्णित जम्बूद्वीप उस भू-भाग को कहा गया है जिसमे मध्य एशिया व भारत के अधिकतम प्रदेश शामिल थे।[12] पामीर के पठार के मेरु पर्वत को ही समुद्र मंथन में मथनी के तौर पर प्रयोग करने का प्राचीन भारतीय ग्रंथों में उल्लेख है। इसी मंथन से 14 रत्न निकले थे, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण रत्न था अमृत। महाभारत अनेक मध्य एशियाई जातियों का वर्णन करता है जैसे शक, दारादा, पहलव एवं किरात [13] महाभारत में नकुल द्वारा कौरव पक्ष के तमाम मध्य एशियाई राजवंशों के पराभव का भी उल्लेख है जिनमें हूण, शक, यवन, पहलव आदि प्रमुख थे। कनिष्क के कबीले यु ची के सदस्यों के युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित होने का भी प्रमाण मिलता है।[14] मत्स्य पुराण व वायु पुराण में *वक्षु नदी* का उल्लेख है, जिसे *अमु दरिया* के नाम से आज जाना जाता है। गौतम बुद्ध के व्यक्तिगत चिकित्सक जीवक ने अपने लेखों में उत्तरी असलनदा और ताशकंद का वर्णन किया है।[15] इस प्रकार अनेक स्रोतों से परस्पर प्रभावों का समुचित प्रमाण उपलब्ध होता है।

परस्पर धार्मिक प्रभाव

धर्म ने दोनों उपमहाद्वीपों के परस्पर संबंधों में क्रांतिकारी भूमिका का निर्वहन किया है। यह आदान-प्रदान तो वैसे प्रागैतिहासिक काल से ही शुरू हो जाता है, लेकिन कुषाण काल तक आते-आते इसमें उल्लेखनीय विस्तार दृष्टिगत होता है। यह समय था जब महायान बौद्ध सम्प्रदाय और उसके सांस्कृतिक तत्व मध्य एशिया होते हुए समूचे विश्व में अपनी आभा का संचार कर रहे थे। कुषाण काल के अनेक बौद्ध मठ आज भी मध्य एशिया में पाए गये हैं। *दलवर्जी तेपे* में एक विशाल बुद्ध प्रतिमा पायी गयी है। दक्षिणी ताजिकिस्तान में अनेक बौद्ध शास्त्र पाए गये हैं। मध्य एशिया के अनेक शासक वंशों ने भारत में अपने शासन के दौरान यहाँ की सभ्यता व संस्कृति का संरक्षण व विकास किया। उन्होंने क्षत्रप और महाक्षत्रप उपाधियाँ धारण की. शकों ने भागवत धर्म, वैष्णव धर्म और सूर्य पूजा को

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शकद्वीपी ब्राह्मणों के माध्यम से संरक्षण दिया। *शकद्वीपी* ब्राह्मणों का मूल स्थान मध्य एशिया माना जाता है। पर्थियनो ने भी सूर्य उपासना को संरक्षित व अभिवर्धित किया। कुषाणों के काल में महायान बौद्ध शाखा के अनेक देवताओं के प्रमाण मिलते हैं जिनमे *अमिताभ* व *अवलोतिकेश्वर* प्रधान थे। उल्लेखनीय है कि भारत का राष्ट्रीय संवत *शक संवत* है जिसे कनिष्क ने 78 ईसवी में प्रारंभ किया। शक संवत एक राष्ट्रीय संवत के रूप में 22 मार्च 1957 को भारत सरकार द्वारा अपनाया गया। मध्य एशिया के ताजिकिस्तान के *पेंजिकेंट* में भगवान् शिव का एक गुह्य चित्र प्राप्त हुआ है। ताजिकिस्तान के ही *अजेना तेपे* में बुद्ध की आदमकद प्रतिमा शयन मुद्रा में मिली है।

किजिल गुफा में हीनयान बौद्ध सम्प्रदाय के ऐतिहासिक महत्व की चित्रकारी मिली है। साथ ही साथ कृष्ण के गाय चराते हुए, कालिदास के रघुवंशम और रानी चन्द्रप्रभा के नृत्य मुद्रा में भी मूल्यवान चित्रकारी पायी गयी है।[16] उपर्युक्त महत्वपूर्ण कलात्मक प्रमाण मध्य एशिया व भारत के बहुआयामी संबंधों पर पार्याप्त प्रकाश डालते हैं। अनेक मध्य एशियाई नगर जैसे कूचा, तिरमिज, अक्सू, उत्तरी जिंगजियांग और बल्ख महत्वपूर्ण बौद्ध केन्द्रों के रूप में विख्यात थे।[17] बौद्ध भिक्षु भारत से बौद्ध संस्कृति को मध्य एशिया ले गए और सूफी संत मध्य एशियाई संस्कृति को भारत ले आये। ट्रांसआक्सियाना में बौद्ध विहारों के प्रमाण 525 ईसा पूर्व से 700 ईसवी तक प्राप्त हुए हैं।[18] मध्य एशिया में बौद्ध धर्म की एक पृथक शाखा का विकास हुआ, जिसे *लामावाद* कहा जाता है। प्रथम सिख गुरु नानक देव ने ओक्सास घाटी की अनेक बार यात्रा की थी जिन्हें *उदासियाँ* कहा गया।

मुहम्मद गोरी के भारत आक्रमण के समय अनेक सूफी सिलसिलों का भारत में आगमन हुआ, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण थे। ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती जिन्होंने कालांतर में अजमेर को अपना केंद्र बनाया। सूफी संतों ने मध्य एशियाई संस्कृति और भारतीय सभ्यता को समन्वित कर दोनों को और परिमार्जित किया।

परस्पर राजनैतिक प्रभाव

मध्य एशियाई राजवंशों हूँण, कुषाण, शकों ने अनेक पीढ़ियों तक भारत पर शासन किया है। वहीं भारतीय वंशों ने भी मध्य एशिया में खोतान व अन्य स्थानों पर साम्राज्य स्थापित किया।[20] कुषाणों का साम्राज्य फरगना की घाटी से साकेत (वर्तमान अयोध्या) तक विस्तृत था। मौर्यों के पश्चात भारत में राजनैतिक एकीकरण के माध्यम कुषाण वंश के शासक बने। इस वंश के महानतम शासक कनिष्क के सिक्के भारत में बिहार से मध्य एशिया के अराल सागर तक पाए गये हैं जो उसके साम्राज्य विस्तार का प्रमाण हैं।[21] भारतीय राजवंशो की उपाधियों में *दिव्य राजत्व का तत्व* मध्य एशियाई शासकों से ही उद्भूत हुआ। यु-ची राजवंशों ने *देवपुत्र* जैसी उपाधियाँ धारण की और राजा का सम्बन्ध दिव्यता से जोड़ने का प्रयास किया।

कालांतर में गुप्तों ने इस राजत्व को दिव्यता से संयुक्त करने की परम्परा को अपनाया और *परम भट्टारक, परम देवत्व, परम भागवत* जैसी उपाधियाँ धारण की. आगे चलकर इन मध्य एशियाई राजवंशों को क्षत्रियों में समाहित कर लिया गया। फलस्वरूप अनेक नवीन क्षत्रिय जातियों का प्रादुर्भाव हुआ जैसे - गुर्जर, प्रतिहार, परमार, चौहान, राठौर आदि. सोग्दियाना से आने वाली क्षत्रिय जातियां चालुक्य और सोलंकी कहलाई. सोग्दियाना की आंचलिक भाषा में

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चालुक्य के लिए चुलीका और सोलंकी के लिए सालिका शब्द प्राप्त होते हैं।[22]

मध्यकाल में भारत में मध्य एशिया से संपर्कों के अनेक ठोस प्रमाण उपलब्ध होते हैं। मुहम्मद बिन तुगलक के दरबार में आधे से अधिक मध्य एशियाई अमीरों का उल्लेख मिलता है, जो खुरासान, तुर्क, मंगोलिया और फारस से थे। सल्तनत काल के इल्बारी तुर्क वस्तुतः पश्चिमी कजाखिस्तान से सम्बंधित थे। ज्ञातव्य है कि इल्तुतमिश से लेकर बलबन तक इल्बारी वंशों ने दिल्ली सल्तनत पर राज किया। दिल्ली सल्तनत के राजकीय सिक्के भारत व ईरान दोनों स्थानों पर प्राप्त हुई हैं। मुग़लों के अमीर मुख्यतः मध्य एशिया व तूरान से थे. हुमायूँ के निर्वासन में 27 तूरानी अमीर उसके साथ फारस गये थे।[23]

निष्कर्ष

मध्य एशिया और भारत दोनों की संस्कृतियाँ परस्पर आदान प्रदान से क्रमशः समृद्ध होती गयी। दोनों उप महाद्वीपों का परस्पर योगदान अमूल्य है, जिसने न केवल सामाजिक संरचना, वेश भूषा, भाषा, रहन सहन, धर्म आदि को प्रभावित किया है अपितु समूचे इतिहास को एक अनूठा स्वरूप प्रदान किया है। इस विषय पर आगे अनेक विद्वानों के शोध अभी जारी हैं और इतिहास में से नये प्रमाण नित्य प्रति उद्घाटित हो रहे हैं। भारत का वर्तमान स्वरूप मध्य एशिया से आयातित तत्वों के कारण ऐसा है और यही तथ्य मध्य एशिया के सन्दर्भ में भी सत्य है। इस बहुआयामी परस्पर प्रभाव के आगामी अध्ययन से अनेक रहस्य सुलझने अभी शेष हैं।

सन्दर्भ सूची

1 हैदर, मंसूर , भारत और मध्य एशिया के परस्पर सम्बन्ध व व्यवहार, दिल्ली, न्यू सेंचुरी प्रकाशन, 2003, पेज 257

2 वही , पेज 261

3इनर एशिया एंड इंडिया थ्रू द एजेज (ऑनलाइन स्रोत) उपलब्ध है- http://himalaya.socanth.cam.ac.uk/collections/journals/bot/pdf/bot_1987_01_full.pdf

4 कुमार , बी, बी , इंडिया एंड सेंट्रल एशिया: लिंक्स एंड इंटरेक्शन. दिल्ली: आस्था भारती प्रकाशन, 2007, पेज 04

5 गुप्ता, एस. पी., सोवियत मध्य एशिया में प्रगैतिहासिक भारतीय संस्कृति, चेन्नई, विवेकानंद केंद्र प्रकाशन. 1970. पृष्ठ 239 - 240

6 5.4.15 महाभारत

7 2.47.19 महाभारत

8 बागची, प्रबोध चन्द्र, प्री आर्यन्स एंड प्री द्रविनियंस इन इंडिया, कलकत्ता, ICCR; 1929.

9 श्रीमद भगवत पुराण , २.४.१८

10 लिट्विन्सकी, B.A. ताजिकिस्तान और भारत , चेन्नई: आभा प्रकाशन. 1964. पृष्ठ 143

11 वात्स्यायन, कपिला, भारत की सांस्कृतिक विरासत, पांचवा खंड, कलकत्ता: रामकृष्ण प्रकाशन, 2009. पृष्ठ 642 - 643.

12 मुजफ्फर अली, सैयद. पुराणों का भूगोल. दिल्ली: पीपुल

13 महाभारत , आदि पर्व, 17

14 महाभारत, 51.23-24 , 30

15 अग्निहोत्री, प्रभु दयाल, पतंजलि कालीन भारत, दिल्ली : इस्टर्न पब्लिकेशन; 2007, पृष्ठ - 92 - 93

16 भट्टाचार्जी, छाया. इण्डिया- ए मेजर सोर्स ऑफ़ सेंट्रल एशियाई आर्ट. चेन्नई; विवेकानंद केंद्र प्रकाशन; 1970 . पृष्ठ. 292

17 हैदर, मंसूर , भारत और मध्य एशिया के परस्पर सम्बन्ध व व्यवहार, दिल्ली, न्यू सेंचुरी प्रकाशन, 2003, पेज 257

18 वही

19 कुमार, बी.बी., इंडिया एंड सेंट्रल एशिया: लिंक एंड इंटरेकशन, दिल्ली, आस्था भारती प्रकाशन, 2007, पृष्ठ 4

20 सांकृत्यायन, राहुल, मध्य एशिया का इतिहास, भाग १ , पटना;मोतीलाल-बनारसीदास प्रकाशन; 2013. पेज 205

21 बागची, पी सी. भारत और मध्य एशिया, कलकत्ता : ICCR ; 1995

22 कुमार. बी. बी, इण्डिया एंड सेन्ट्रल एशिया : लिंक एंड इंटरेक्शन. दिल्ली: आस्था भारती प्रकाशन. 2007, पृष्ठ 17

पुस्तक

1 अग्निहोत्री, प्रभु दयाल, *पतंजलि कालीन भारत*, दिल्ली : इस्टर्न पब्लिकेशन; 2007

2 भट्टाचार्जी, छाया. *इण्डिया- ए मेजर सोर्स ऑफ़ सेंट्रल एशियाई आर्ट.* चेन्नई; विवेकानंद केंद्र;

3 1970 बागची, पी सी. *भारत और मध्य एशिया,* कलकत्ता : ICCR ; 1995

4 बागची, प्रबोध चन्द्र, *प्री आर्यन्स एंड प्री द्रविनियंस इन इंडिया,* कलकत्ता, ICCR; 1929.

5 गुप्ता, एस. पी., *सोवियत मध्य एशिया में प्रगैतिहासिक भारतीय संस्कृति*, चेन्नई, विवेकानंद केंद्र प्रकाशन. 1970

6 हैदर, मंसूर , *भारत और मध्य एशिया के परस्पर सम्बन्ध व व्यवहार*, दिल्ली, न्यू सेंचुरी प्रकाशन, 2003,

7 कुमार. बी. बी, *इण्डिया एंड सेन्ट्रल एशिया : लिंक एंड इंटरेक्शन.* दिल्ली: आस्था भारती प्रकाशन. 2007

8 लिट्विन्सकी, B.A. *ताजिकिस्तान और भारत ,* चेन्नई: आभा प्रकाशन. 1964

9 महाभारत

10 मुजफ्फर अली, सैयद. *पुराणों का भूगोल.* दिल्ली: पीपुल प्रकाशन: 1987

11 श्रीमदभागवत पुराण

12 वात्स्यायन, कपिला, *भारत की सांस्कृतिक विरासत,* पांचवा खंड, कलकत्ता: रामकृष्ण प्रकाशन, 2009 **ऑनलाइन स्रोत**

इनर एशिया एंड इंडिया थ्रू द एजेज (ऑनलाइन स्रोत) उपलब्ध है http://himalaya.socanth.cam.ac.uk/collections/journals/bot/pdf/bot_1987_01_full.pdf